the pioneer
LUCKNOW I MONDAY I JUNE 30, 2014

Bio control laboratory inaugurated at IISR

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

CaneDES will diagnose disorder, damage caused by various insect-pests, diseases and nutrient deficiency factors in sugarcane crop. It also guides for management of various biotic and abiotic stresses of sugarcane

Indian Institute of Sugarcane Research (IISR), Lucknow, has added another feather to its cap by developing a computer-based expert system called CaneDES and dedicating newly-developed bio-control lab in the service to the nation.

Director-General, ICAR, and Secretary (DARE), Ministry of Agriculture, Government of India, Dr S Ayyappan inaugurated the bio-control lab and CaneDES expert system on Sunday at IISR in the presence of scientists, farmers and media persons and applauded the team involved in its development.

CaneDES will diagnose disorder, damage caused by various insect-pests, diseases and nutrient deficiency factors in sugarcane crop. It also guides for management of various biotic and abiotic stresses of sugarcane. Director, Indian Institute of Sugarcane Research, Dr S Solomon appreciated the efforts of scientists Dr SS Hasan, Dr AK Sah, Dr Baitha, Dr MR Singh, Dr S Shukla in coming out with such a remarkable achievement.

Principal scientist and co-investigator in this project Dr AK Sah elaborated that every year farmers incurred a loss of 10-20% in sugarcane production which accounted for about 35-70 million tones cane.

"As a result huge monetory losses to the tune of ₹7,000-10,000 crore per year is incurred by cane growers of the country. CaneDES may help farmers in minimising loss to a great extent by helping them to adopt correct control measures well in time against diagnosed disorders appeared in sugarcane crop. This will result in increased production and productivity of sugarcane which also help sugar industry in terms of increased availability of raw material i.e. sugarcane during crushing period," he said.

HINDUSTAN TIMES, LUCKNOW
MONDAY, JUNE 30, 2014

Bio-control lab to help cut cane growers' losses

LUCKNOW: The Indian Institute of Sugarcane Research (IISR) has developed a computer-based expert system and dedicated a newly developed bio-control lab which Dr S Ayyappan, director general, Indian Council of Agricultural Research (ICAR), inaugurated on Sunday.

The expert system will diagnose disorder/damage caused by various insect-pests, diseases and nutrient deficiency factors in sugarcane crop. Developed by a team of scientists, it would be useful for farmers who incurred a loss of 10-20% in sugarcane production on account of insect-pest attacks, all of which led to a loss of Rs 7000-10000 crore per year for cane growers of the country, said Dr AK Sah, principal scientist and co-investigator in the project.

The system and bio-control lab entail scientists devising ways to control or manage insect-pests by utilising naturally available bio agents.

Established on the IISR campus, the bio-control laboratory is dedicated to public service for rearing of parasites, predators (egg, larvae, nymph) and their distribution to sugarcane farmers and sugar industry for larger scale adoption of bio-control technique. Of the 225 insect-posts which attack sugarcane crop in the field, two dozen cause severe damage, reducing the crop yield below the economic threshold level. With insects-pests controlled by pesticides since long, they now have developed resistance towards chemicals, compelling farmers to apply a higher dose that pollute the soil and the environment. HTC

THE EXPERT SYSTEM WILL DIAGNOSE DISORDER/DAMAGE CAUSED BY VARIOUS INSECT-PESTS IN SUGARCANE CROP

अमर उजाला

लखनऊ। सोमवार। 30 जून 2014

केनडेस बताएगा गन्ने के कीट और रोग

आईआईएसआर में आयोजित उद्घाटन समारोह में जानकारी हासिल करते भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एस अय्यप्पन।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में कंप्यूटर प्रणाली का उद्घाटन

लखनऊ (ब्यूरो)। गन्ने की फसल को 200 से ज्यादा किस्म के कीट और 30 के करीब रोग प्रभावित कर सकते हैं। इनकी वजह से हर साल 7 से 10 हजार करोड़ की गन्ने की फसल खराब हो रही है। इसे रोकने के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) में रविवार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एस अयप्पन ने 'केनडेस' प्रणाली का उद्घाटन किया। यह कंप्यूटर आधारित सिस्टम है, जिसका उपयोग दूर गांव में बैठे किसान इंटरनेट के जरिये कर सकेंगे।

उद्घाटन कार्यक्रम में केनडेस के बारे में विशेषज्ञ वैज्ञानिक डॉ. एसएस हसन ने बताया कि केनडेस एक कंप्यूटर सॉफ्टवेयर पर आधारित तकनीक है। इसमें पंजीकृत उपयोगकर्ता को यूजर आईडी और पासवर्ड दिया जाता है। जिससे वे इंटरनेट के जरिये दुनिया में कहीं से भी गन्ने के कीटों, परजीवियों, बीमारियों आदि की जानकारी ले सकेंगे। तकनीक को विकसित करने के लिए डॉ. हसन, डॉ. महाराम सिंह, डॉ. ए. बैठा, डॉ. एस शुक्ला, आदि की टीम और निदेशक डॉ. एस सोलोमन को डॉ. अयप्पन ने बधाई दी। वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने बताया कि इस तकनीक के मद्देनजर आईआईएसआर में एक जैविक नियंत्रण प्रयोगशाला भी स्थापित की गई। डॉ. अयप्पन ने आईआईएसआर कैंपस में जारी आम मेले में भी शिरकत की। उन्होंने किसानों द्वारा प्रदर्शित आमों की प्रदर्शनी में 200 से अधिक किस्म केआमों को देखकर इनकेसंरक्षण पर संतोष जताया।

राष्ट्रीय सहारा
www.samaylive.com
सच कहने की हिम्मत
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण

जैव नियंत्रण प्रयोगशाला व 'केनडेस' का उद्घाटन

सरोज़नीनगर-लखनऊ (एसएनबी)। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डा. एस अय्यप्पन ने कहा कि गन्ना शोध में उत्कृष्टता को बरकरार रखते हुए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ ने अपनी उपलब्धियों में एक नये आयाम को जोड़ लिया है। श्री अय्यप्पन रविवार को संस्थान द्वारा विकसित कम्प्यूटर आधारित विशेषज्ञ प्रणाली "केनडेस" का उद्घाटन करने के बाद मौजूद कृषि वैज्ञानिको एवं अधिकारियों को सम्बोधित कर रहे थे।

गन्ना किसानों को मिलेगा लाभ

इस मौके पर डा. अय्यप्पन ने इस सफलता के लिए विशेषज्ञ प्रणाली के वैज्ञानिक टीम डा. एसएस हसन, डा. एके साह, डा. महाराम सिंह, डा. ए बैठा एवं डा.एस. शुक्ल को बधाई दी तथा संस्थान के निदेशक डा. एस. सोलोमन का धन्यवाद किया। इस अवसर पर महानिदेशक श्री अय्यप्पन ने संस्थान में नवीन निर्मित जैव नियंत्रण प्रयोगशाला का भी उद्घाटन किया तथा इस प्रयोगशाला को देश के गन्ना किसानों तथा चीनी उद्योग की सेवा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। संस्थान के निदेशक ने विशेषज्ञ प्रणाली में वैज्ञानिकों के अथक प्रयास को सराहते हुए कहा कि आगे भी संस्थान गन्ना एवं चीनी उद्योग की सेवा में सफलता प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयास करता रहेगा। प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रोजेक्ट सहकर्मी डा. एके साह, ने बताया कि 200 से ज्यादा कीट और 30 से ज्यादा रोग गन्ना फसल को प्रभावित करते हैं जिससे गन्ना किसानों को प्रतिवर्ष लगभग 7000-10000 करोड़ रुपए का नुकसान होता है। केनडेस की सहायता से सही समय पर विकारों की पहचान और निदान करके इस नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इससे गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होगी और चीनी मिलों को ज्यादा मात्रा में गन्ना उपलब्ध होगा। गन्ने के कीटों का प्रबंधन जैविक विधि द्वारा सफलता पूर्वक किया जा सकता है। इस उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का गन्ना फसल में लगने वाले नाशी कीटों के नियंत्रण में महत्वपूर्ण सम्भावना को देखते हुए संस्थान ने जैव नियंत्रण प्रयोगशाला स्थापित किया जिसको आज गन्ना किसानों कि सेवा में समर्पित किया गया। गन्ने के कीटों के प्रबंधन में जैविक नियंत्रण के सभी आयाम जैसे प्राकृतिक शत्रुओं का संचय एवं उनके बढ़ोत्तरी की प्रक्रिया, परजीवियों का प्रवेश न तथा उनका उप निवेशन और परजीवियों का संवर्धन जैसे कार्य इस प्रयोगशाला में संचालित किया जाएगा।

गन्ना अनुसंधान संस्थान में जैव विविधता मेला एवं किसान गोष्ठी का उद्घाटन करते कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डा. एस अय्यप्पन। *फोटो : एसएनबी*

राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित
युनाइटेड भारत
लखनऊ, सोमवार 30 जून, 2014- मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 16

गन्नो में कीट व्याधि पहचान के लिए नई प्रणाली विकसित

यूनाइटेड समाचार सेवा

लखनऊ, २९जून। आई.आई.एस.आर. ने नई विशेषज्ञ प्रणाली विकसित की आज इस प्रणाली को राष्ट्र के प्रति समर्पित करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और सचिव कृषि मंत्रालय के डा. एस अयप्पन ने कहा कि आईआईएसआर सदैव किसान हितों के लिये, शोध करता रहेगा। महानिदेशक ने इस सुविधा को समझा और इसके विकासकर्ताओं को इस उपलब्धि पर बधाई के लिये बधाई दी। डा. सुशील सोलोमन, निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने डा. हसन और उनकी टीम को इस उपलब्धि के लिये बधाई दी और गन्ना किसानों के लिये हमेशा जुझारू रहने का वादा किया। गन्ना हमारे देश की प्रमुख नकदी फसल है जो चीनी उद्योग के लिये मुख्य कच्चा माल/निवेश है।१७ राज्यों के लगभग ५ करोड़ किसान और ५ लाख मजदूर इस उद्योग पर आजीविका एवं आर्थिक समृद्धि के लिए निर्भर है। डा. ए.के. साह, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रोजेक्ट सहकर्मी ने बताया कि २०० से ज्यादा कीट और ३० से ज्यादा रोग गन्ना फसल को प्रभावित करते है जिससे गन्ना किसानों को प्रतिवर्ष लगभग ७०००-१०००० करोड़ रूपये का नुकसान होता है। की सहायता से सही समय पर विकारों की पहचान और निदान करके इस नुकसान का काफी हद तक कम किया जा सकता है। इससे गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होगी और चीनी मिलों को ज्यादा मात्रा में गन्ना उपलब्ध होगा। डा. अजम शाह ने बताया कि इंग्लिश के अलावा सॉफ्टवेयर की हिन्दी में उपलब्धता हमारे हिन्दी क्षेत्र के किसानों के लिये बहुत उपयोगी है। गन्ने में शोध, शिक्षा, विकास, विस्तार और उत्पादन से जुड़े सभी लोगों के लिये यह साफ्टवेयर अत्यंत उपयोगी है। इसका उपयोग न केवल विकारों को पहचानने बल्कि गन्ना फसल के उत्पादन और सुरक्षा के ज्ञान को बढ़ाने के लिये भी किया जा सकता है। इसका उपयोग करने के लिये जरूरी यूजर आई डी / पासवर्ड साफ्टवेयर में पंजीकरण करके लिया जा सकता है।

दैनिक जागरण
लखनऊ, 30 जून 2014

केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान के तत्वावधान में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित 'आम में मूल्य शृंखला प्रबंधन के सहभागिता' विषयक सेमिनार में लगे सुनियोजित कृषि विकास केंद्र (पीएफडीसी) के स्टाल का निरीक्षण करते डीडीजी हार्टिकल्चर कृष्ण कुमार जागरण

गन्ना अनुसंधान संस्थान में जैव नियंत्रण प्रयोगशाला का उद्घाटन के बाद अवलोकन करते डॉ. एस अय्यप्पन जागरण

03 हिन्दुस्तान
लखनऊ • सोमवार • 30 जून 2014

बड़े शहरों में दशहरी की प्रदर्शनी

लखनऊ | प्रमुख संवाददाता

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) अगले साल से उत्तर में दिल्ली से दक्षिण में त्रिवेन्द्रम तक देश के दस प्रमुख बड़े शहरों में दशहरी आम की प्रदर्शनी लगाएगा। आईसीएआर के महानिदेशक डा. एस अय्यप्पन ने रविवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित 'आम जैव विविधता मेला एवं किसान गोष्ठी' में यह घोषणा की। गोष्ठी का आयोजन केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान की ओर से किया गया था।

डा. अय्यप्पन ने कहा कि आईसीएआर उत्तर प्रदेश और आन्द्र प्रदेश के बागवानों को एक दूसरे के प्रदेशों में भेजेगा ताकि दोनों राज्यों के बागावनों के बीच तकनीकी का हस्तांतरण हो। साथ ही दोनों प्रदेशों के आम भी एक-दूसरे के प्रदेश में अपने खर्चे पर भिजवाएगा। डा. अय्यप्पन ने कहा कि जब मैक्सिको से बेहतर क्वालिटी का आम वहां पहुंच जाता है तब वहां की सरकार

गन्ना अनुसंधान संस्थान में रविवार को किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया

गोष्ठी से नदारद रहे प्रदेश सरकार के महकमे

प्रदेश के आम उत्पादकों को उनके आम का वाजिब मूल्य मिले इसके लिये आयोजित गोष्ठी में प्रदेश सरकार के महकमे पूरी तरह से नदारद रहे। बागवानों से लेकर वैज्ञानिकों तक का कहना था कि सीआईएसएच व विशेषज्ञों का काम तो तकनीकी व वैराइटी का विकास करना है जबकि उत्पादन के बाद वैल्यू चेन का कार्य राज्य सरकार का है।

को भारतीय आम में खोट दिखने लगता है। ऐसे में हमें अपने उत्पाद की क्वालिटी को बेहतर बनाना होगा। इसके लिए प्रतिबन्धित रसायनों का प्रयोग पूरी तरह से छोड़ना होगा। **आईआईएसआर में खुला जैव नियंत्रण प्रयोगशाला :** डा. अय्यप्पन ने गोष्ठी के बाद भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में नवनिर्मित जैव नियंत्रण प्रयोगशाला व संस्थान द्वारा विकसित कम्प्यूटर आधारित विशेषज्ञ प्रणाली 'केनडेस' का उद्घाटन किया। केनडेस की सहायता से सही समय पर विकारों की पहचान कर नुकसान कम किया जा सकता है।

लखनऊ
डेली न्यूज़
लखनऊ, सोमवार, 30 जून 2014

200 कीट व 30 रोग नष्ट करते हैं गन्ना

लखनऊ (डीएनएन) । दो सौ से ज्यादा कीट और 30 से ज्यादा रोग गन्ना फसल को प्रभावित करते हैं। जिससे गन्ना किसानों को हर साल लगभग 7000-10000 करोड़ रुपए का नुकसान होता है। अब इस नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकेगा। ऐसा

• अब केनडेस खत्म करेगा गन्ना कीटों को

इसलिए क्योंकि भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) कंप्यूटर आधारित विशेषज्ञ प्रणाली 'केनडेस' का सहारा लेगा। यह जानकारी रविवार को संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक और प्रोजेक्ट सहकर्मी डॉ. एके साह ने जैव नियंत्रण प्रयोगशाला और केनडेस विशेषज्ञ प्रणाली के उद्घाटन के दौरान दी।

उन्होंने बताया कि केनडेस की सहायता से सही समय पर विकारों की पहचान और निदान कर इस नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इससे गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में बढ़ोतरी होगी। साथ ही चीनी मिलों को ज्यादा गन्ना मुहैया हो

भारत में गन्ने के कीटों के प्राकृतिक दुश्मन जैसे परजीवी, परभक्षी और कीट बीमारियों की भरमार हैं। ये कीटों के प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में अपनी-अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। गन्ने के कीटों की रोकथाम इस जैविक विधि से की सकती है।

सकेगा। संस्थान के निदेशक डॉ. एस. सोलोमन ने कहा कि प्रयोगशाला देश के गन्ना किसानों और चीनी उद्योग की सेवा में अहम किरदार अदा करेगी। विशेषज्ञ प्रणाली के वैज्ञानिक टीम के सदस्य डॉ. एसएस हसन ने बताया कि यह सॉफ्टवेयर वेब आधारित है और ग्रामीण क्षेत्रों में भी इंटरनेट के जरिए से इस्तेमाल किया जा सकता है। गन्ने में शोध, शिक्षा, विकास, विस्तार और उत्पादन से जुड़े सभी लोगों के लिए यह सॉफ्टवेयर बहुत उपयोगी हैं। इसका इस्तेमाल न सिर्फ विकारों को पहचानने, बल्कि गन्ना फसल के उत्पादन और सुरक्षा की जानकारी को बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है। कार्यक्रम का उद्घाटन कृषि अनुसंधान परिषद् के महानिदेशक डॉ. एस अय्यप्पन ने किया।

लखनऊ, सोमवार, 30 जून, 2014
परख सच की
जनसंदेश टाइम्स

जैव नियंत्रण प्रयोगशाला चीनी उद्योग के लिए लाभप्रद

लखनऊ। गन्ना किसानों और चीनी उद्योग से जुड़े व्यापार जगत के लिए कम्प्यूटर आधारित विशेषज्ञ प्रणाली केनडेस और नवनिर्मित जैव नियंत्रण प्रयोगशाला लाभप्रद साबित होगी। इनके प्रयोग से न केवल गन्ने पर आधारित उत्पादन बढ़ेगा बल्कि उम्दा किस्म की फसल तैयार होने पर इनकी मांग देश ही नहीं बल्कि विदेशों में बढ़ेगी। जो कि निश्चत रुप से चीनी उद्योग जगत के लिए एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

यह बात रविवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में कम्प्यूटर आधारित विशेषज्ञ प्रणाली केनडेस और नवनिर्मित जैव नियंत्रण प्रयोगशाला भवन का उद्घाटन करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के महानिदेशक और सचिव डेयरी भारत सरकार डॉ. एस अय्यप्पन ने बतौर मुख्यअतिथि के रुप में अपने सम्बोधन में कहीं। उन्होंने कहा कि गन्ना शोध में उत्कृष्टता को बरकरार रखते हुए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान(आइआइएसआर) ने अपनी उपलब्धियों में एक नये आयाम को जोड़ लिया है।

रायबरेली रोड सिथत गन्ना अनुसंधान संस्थान मे जैविक नियत्रण प्रयोगशाला का उदघाटन करते सचिव कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग भारत सरकार डॉ एस अय्यप्पन

उद्घाटन

गन्ना आधारित फसलों में आएगा सुधार

कम्प्यूटर आधारित प्रणाली के जरिए बराबर सम्पर्क में रहेंगे किसान-वैज्ञानिक

डॉ. अय्यप्पन ने इस सफलता के लिए विशेषज्ञ प्रणाली के वैज्ञानिक टीम डॉ. एसएस हसन, डॉ. ए के साह, डॉ. महाराम सिंह, डॉ. ए बेठा एवं डॉ. एस शुक्ला को बधाई दी। इस अवसर पर आइआइएसआर के निदेशक डॉ. एस सोलोमन ने विशेशज्ञ प्रणाली में वैज्ञानिकों के अथक प्रयास को सराहते हुए कहा कि आगे भी इसी तरह गन्ना एवं चीनी उद्योग की सेवा में अनेकों सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करता रहेगा।

इस मौके पर प्रधान वैज्ञानिक डा. ए.के. साह ने बताया कि 200 से ज्यादा कीट और 30 से ज्यादा रोग गन्ना फसल को प्रभावित करते है जिससे गन्ना किसानों को प्रतिवर्ष लगभग 7000-10000 करोड़ रुपये का नुकसान होता है। केनडेस की सहायता से सही समय परे विकारों की पहचान और निदान करके इस नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इससे गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होगी और चीनी मिलों को ज्यादा मात्रा में गन्ना उपलब्ध होगा। यह सॉफ्टवेयर वेब आधारित है और दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में भी इंटरनेट के माध्यम से इस्तेमाल किया जा सकता है। गन्ने में शोध, शिक्षा, विकास, विस्तार और उत्पादन से जुड़े सभी लोगों के लिए यह सॉफ्टवेयर अत्यंत उपयोगी है। इसका उपयोग न केवल विकारों को पहचानने बल्कि गन्ना फसल के उत्पादन और सुरक्षा के ज्ञान को बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है। इसका उपयोग करने के लिए जरुरी यूजर आईडी,पासवर्ड सॉफ्टवेयर में पंजीकरण करके लिया जा सकता है।

उन्होंने बताया कि गन्ने के कीटों के प्रबंधन में जैविक नियंत्रण के सभी आयाम जैसे प्राकृतिक शत्रुओं का संचय एवं उनके बढ़ोत्तरी की प्रक्रिया, परजीवियों का प्रवेश न व उनका उप निवेशन और परजीवियों का संवर्धन जैसे कार्य इस प्रयोगशाला में संचालित किया जावेगा। *वसं.*

कल्पतरु एक्सप्रेस
www.kalptaruexpress.com
लखनऊ, सोमवार, 30 जून 2014
5

उपलब्धि

डॉ. एस अयप्पन ने किया जैव नियंत्रण प्रयोगशाला का उद्घाटन

आईआईएसआर की 'केनडेस' देश को समर्पित

- प्रति वर्ष देश में दस हजार करोड़ रुपए के गन्ना नुकसान पर लगेगा विराम

कल्पतरु समाचार सेवा

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा गन्ना शोध में उत्कृष्टता को बरकरार रखते हुए कम्प्यूटर आधारित विशेषज्ञ प्रणाली 'केनडेस' विकसित की गई है। इस प्रणाली का लोकार्पण रविवार को संस्थान में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एस अय्यप्पन ने किया। उन्होंने इस सफलता के लिए वैज्ञानिकों की टीम को धन्यवाद दिया। इस मौके पर उन्होंने संस्थान में जैव नियंत्रण प्रयोगशाला का भी उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि यह प्रयोगशाला देश के गन्ना किसानों तथा चीनी उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

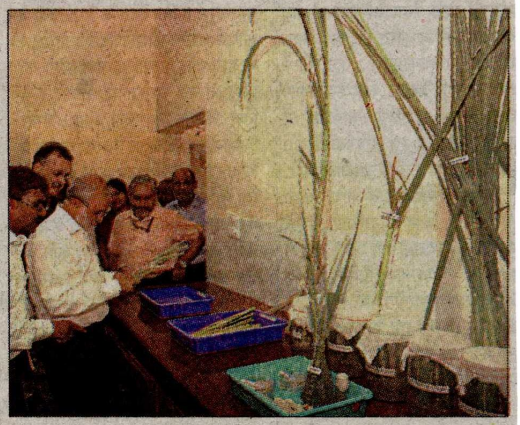

इस प्रोजेक्ट पर कार्य करनेवाले प्रधान वैज्ञानिक एके साह ने बताया कि देश में गन्ने के प्राकृतिक शत्रुओं की भरमार है। दो सौ से अधिक कीट और 30 से अधिक रोग गन्ना फसल को प्रभावित करते हैं। इसके कारण प्रति वर्ष गन्ना किसानों को सात हजार से 10 हजार करोड़ रुपए तक का नुकसान होता है। जैविक विधि द्वारा गन्ने के कीटों का प्रबंधन किया जा सकता है। 'केनडेस' इस प्रकार के विकारों की पहचान कर नुकसान को काफी हद तक कम करेगी।

डॉ. हसन ने इस प्रणाली के बारे में बताया कि यह सॉफ्टवेयर आधारित प्रणाली है। इसका प्रयोग दूर गांवों में भी किया जा सकेगा। यह गन्ना शोध, शिक्षा, विकास, विस्तार और उत्पादन से जुड़े सभी लोगों के लिए बेहद उपयोगी होगा। केवल विकारों को पहचानने में ही नहीं, बल्कि गन्ना फसल के उत्पादन और सुरक्षा संबंधी जानकारी बढ़ाने के लिए भी इसका प्रयोग किया जा सकेगा।

2 गन्ना टाइम्स
लखनऊ | सोमवार, 30 जून, 2014

जैव नियंत्रण प्रयोगशाला एवं केन्डेस विशेषज्ञ प्रणाली का उद्घाटन

लखनऊ, 29 जून। गन्ना शोध में उत्कृष्टता को बरकरार रखते हुए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ ने अपनी उपलब्धियों में एक नये आयाम को जोड़ लिया है। संस्थान द्वारा विकसित कम्प्यूटर आधारित विशेषज्ञ प्रणाली ''केनडेस'' का उद्घाटन डा. एस. अय्यप्पन, महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् तथा सचिव-डेयर, भारत सरकार के कर-कमलों द्वारा किया गया तथा इस प्रणाली को राष्ट्र को समर्पित किया गया।

डा. अय्यप्पन ने इस सफलता के लिए विशेषज्ञ प्रणाली के वैज्ञानिक टीम डा. एसएस हसन, डा. एके साह, डा. महाराम सिंह, डा. ए. बैठा एवं डा. एस शुक्ला को बधाई दिया तथा संस्थान के निदेशक डा. एस सोलोमन का धन्यवाद किया। इस अवसर पर महानिदेशक महोदय ने संस्थान में नवीन निर्मित जैव नियंत्रण प्रयोगशाला का भी उद्घाटन किया तथा इस प्रयोगशाला को देश के गन्ना किसानों तथा चीनी उद्योग की सेवा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

संस्थान के निदेशक ने विशेषज्ञ प्रणाली में वैज्ञानिकों के अथक प्रयास को सराहते हुए कहा कि आगे भी संस्थान गन्ना एवं चीनी उद्योग की सेवा में अनेकों सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करता रहेगा। डा. ए.के. साह, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रोजेक्ट सहकर्मी ने बताया कि 200 से ज्यादा कीट और 30 से ज्यादा रोग गन्ना फसल को प्रभावित करते है जिससे गन्ना किसानों को प्रतिवर्ष लगभग 7000-10000 करोड़ रूपए का नुकसान होता है। केनडीईएस की सहायता से सही समय पर विकारों की पहचान और निदान करके इस नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इससे गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होगी।